Poems

Poet: *BK Mukesh*

विश्व सेवाधारी

अपना श्रेष्ठ भाग्य देखकर असीम आनन्द आया
जन्म जन्म अविनाशी भाग्य देने वाला मैंने पाया

मेरी जीवन नैया की थामी उसने हाथों में पतवार
उसके प्यार में लीन होकर परिवर्तन हुए संस्कार

बाप के दिलतख्त पर हुआ हूँ जब से मैं आसीन
बेफिक्र बन मैं उड़ रहा मेरे पांव छूते नहीं जमीन

प्रभु प्यार में खोकर मैं हर आकर्षण से दूर हुआ
देहभान छोड़कर मैं बाबा के नयनों का नूर हुआ

निर्विघ्न बना मेरा जीवन हर समस्या हुई समाप्त
प्रभु प्यार की सुगन्ध मेरी नस नस हो गई व्याप्त

विश्व कल्याण का शुद्ध कर्तव्य मेरे मन में आया
अपने अन्दर सोई सर्व शक्तियों को मैंने जगाया

समय अनुसार सर्व शक्तियों को कार्य में लगाऊँ
मास्टर सर्व शक्तिमान का टाइटल बाप से पाऊँ

बाप समान विश्व सेवा करना पसन्द मुझे आया
धन्यवाद करूँ बाबा का जो ऐसा अवसर पाया ||

" ॐ शांति "

Source: shivbabas.org/poems **BK Google**: www.bkgoogle.org